

बौद्ध पर्यटन डिप्लोमा प्रोग्राम
(Diploma Program in Buddhist Tourism) - DPBT

पाठ्यक्रम संरचना

- 32 क्रेडिट, 2 सेमेस्टर में 4-4 प्रश्नपत्र = 8 प्रश्नपत्र
- प्रथम सेमेस्टर में 4 प्रश्नपत्र तथा द्वितीय सेमेस्टर में 4 प्रश्नपत्र = कुल 8 प्रश्नपत्र
- प्रत्येक प्रश्नपत्र = 4 क्रेडिट
- प्रथम सेमेस्टर में 16 क्रेडिट तथा द्वितीय सेमेस्टर में 16 क्रेडिट = कुल 32 क्रेडिट
- Online

यह पाठ्यक्रम Outcome-Based Education, NEP-2020, भारतीय ज्ञान परम्परा, कौशल-आधारित अधिगम तथा रोजगारोन्मुख पर्यटन-शिक्षा के समन्वय पर आधारित है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

- "बौद्ध पर्यटन" डिप्लोमा प्रोग्राम के उद्देश्य निम्नलिखित हैं, जो विद्यार्थियों को बौद्ध विरासत, तीर्थ-परम्परा, पर्यटन-प्रबन्धन और व्यावहारिक कौशल के क्षेत्र में सक्षम बनाने के लिए निर्मित किए गए हैं:-

बौद्ध विरासत का सम्यक् ज्ञान विकसित करना:

- बौद्ध धर्म, बुद्ध-जीवन, प्रमुख संप्रदायों तथा बौद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं का आधारभूत एवं अनुप्रयुक्त ज्ञान प्रदान करना।
- भारत और विश्व के प्रमुख बौद्ध तीर्थों, स्मारकों, विहारों, स्तूपों और सांस्कृतिक स्थलों की पहचान कराना।

बौद्ध तीर्थ-परम्परा का अध्ययन कराना:

- लुम्बिनी, बोधगया, सारनाथ, कुशीनगर, श्रावस्ती, राजगीर, वैशाली, नालन्दा, साँची, अजन्ता आदि तीर्थों के ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व को समझाना।
- तीर्थयात्रा, pilgrimage circuits और Buddhist Circuit की अवधारणा का अध्ययन कराना।

पर्यटन प्रबन्धन कौशल का विकास:

- विद्यार्थियों को itinerary planning, tour operation, visitor management, hospitality और travel coordination का प्रशिक्षण देना।
- पर्यटन उद्योग की मूल संरचना, संस्थागत नेटवर्क और प्रबन्धकीय प्रक्रियाओं से परिचित कराना।

Heritage Interpretation की क्षमता विकसित करना:

- विद्यार्थियों को सांस्कृतिक धरोहर की अर्थपूर्ण, संदर्भ-सम्मत और पर्यटक-उन्मुख व्याख्या करने में सक्षम बनाना।
- स्मारकों, संग्रहालयों, स्तूपों, मठों और पुरास्थलों के लिए interpretive skills विकसित करना।

Tour Guiding एवं Communication Skills को सुदृढ़ करना:

- बहुभाषिक संप्रेषण, guiding ethics, group handling, visitor briefing और intercultural communication का प्रशिक्षण देना ।
- बौद्ध पर्यटन के सन्दर्भ में शिष्टाचार, प्रस्तुतीकरण-कौशल और आतिथ्य व्यवहार विकसित करना ।

Digital Tourism एवं प्रचार-कौशल सिखाना:

- डिजिटल मानचित्रण, e-content, virtual tour support, social media promotion और online destination visibility का प्रशिक्षण देना ।
- विद्यार्थियों को आधुनिक पर्यटन-प्रसार के डिजिटल उपकरणों से परिचित कराना ।

Sustainable Buddhist Tourism को प्रोत्साहित करना:

- पर्यावरण-संवेदी, समुदाय-आधारित, उत्तरदायी और टिकाऊ पर्यटन की अवधारणा विकसित करना ।
- धरोहर-संरक्षण और पर्यटन-विकास के संतुलन को समझाना ।
- शासकीय पर्यटन नीति, पुरातात्विक संरक्षण और भविष्यगामी सम्भावनाएँ

धार्मिक एवं आध्यात्मिक पर्यटन की समझ देना:

- बौद्ध पर्यटन को आध्यात्मिक अनुभव, ध्यान, सांस्कृतिक संवाद और नैतिक जीवन-मूल्यों से जोड़ना ।
- धार्मिक पर्यटन के सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक आयामों का अध्ययन कराना ।

रोजगारपरक एवं उद्यमिता कौशल विकसित करना:

- विद्यार्थियों को heritage guide, tour planner, travel consultant, content developer और tourism entrepreneur के रूप में सक्षम बनाना ।

- सूक्ष्म उद्यम, तीर्थ-आधारित सेवाएँ, heritage walk design तथा project consultancy की प्रारम्भिक समझ विकसित करना।

बौद्ध पर्यटन डिप्लोमा प्रोग्राम

(Diploma Program in Buddhist Tourism) – DPBT

1 वर्ष (दो सेमेस्टर), पाठ्यक्रम संरचना (32 क्रेडिट, 8 प्रश्नपत्र, प्रत्येक प्रश्नपत्र 4 क्रेडिट) - Online

सेमेस्टर 1 (16 क्रेडिट)

पाठ्यक्रम संरचना (Detailed Course Structure)

प्रश्नपत्र-1

बौद्ध धर्म एवं बौद्ध पर्यटन का परिचय

(Introduction to Buddhism and Buddhist Tourism)

सेमेस्टर	प्रश्नपत्र कोड	पाठ्यक्रम विवरण	क्रेडिट	यूनिट	घण्टे
सेमेस्टर - 1	DBTP-01	पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) : 1. बौद्ध धर्म, बुद्ध-जीवन और बौद्ध परम्परा की आधारभूत समझ विकसित करना । 2. बौद्ध पर्यटन की संकल्पना, प्रकृति और समकालीन उपयोगिता स्पष्ट करना । 3. बौद्ध तीर्थ, pilgrimage और spiritual tourism के परस्पर सम्बन्ध को समझाना । 4. भारतीय ज्ञान परम्परा, सांस्कृतिक विरासत और पर्यटन के एकीकरण की दृष्टि देना । 5. विद्यार्थी को बौद्ध पर्यटन अध्ययन के मूल स्रोतों, अवधारणाओं और प्रयोजनों से परिचित कराना ।			

		अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : 1. विद्यार्थी बौद्ध धर्म और बौद्ध पर्यटन की मूल अवधारणाओं का वर्णन कर सकेंगे। 2. वे बौद्ध पर्यटन के धार्मिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक आयामों को स्पष्ट कर सकेंगे। 3. वे प्रमुख बौद्ध स्थलों और उनसे सम्बद्ध घटनाओं की पहचान कर सकेंगे। 4. वे बौद्ध पर्यटन की सामाजिक-आर्थिक उपयोगिता पर टिप्पणी कर सकेंगे। 5. वे पर्यटन अध्ययन में बौद्ध विरासत की भूमिका को समझ सकेंगे।		
		प्रश्नपत्र का नाम (Name of the Paper) : बौद्ध धर्म एवं बौद्ध पर्यटन का परिचय (Introduction to Buddhism and Buddhist Tourism)		
		क्रेडिट--1 : बौद्ध धर्म की आधारभूमि 1.1 भगवान् बुद्ध का जीवन-चरित और चार संवेजनीय स्थल 1.2 चार आर्यसत्य और आर्य अष्टाङ्गिक मार्ग 1.3 त्रिरत्न, पंचशील और संघ-परम्परा 1.4 बौद्ध संप्रदायों का संक्षिप्त परिचय 1.5 बौद्ध धर्म का वैश्विक प्रसार 1.6 बौद्ध संघ एवं बौद्ध शिक्षण व्यवस्था	1	16-20

		क्रेडिट--2 : बौद्ध पर्यटन की संकल्पना 2.1 बौद्ध पर्यटन का अर्थ और स्वरूप 2.2 महापरिनिब्बान सुत्त में चत्तारि संवेजनीय- ठानानि (4 संवेग उत्पत्ति स्थान) 2.3 अट्टकथाओं में अट्ट महाठानानि (8 महास्थान) 2.4 तीर्थ (Pilgrimage site), तीर्थाटन (pilgrimage) और पर्यटन (tourism) का अन्तःसम्बन्ध 2.5 धार्मिक एवं आध्यात्मिक पर्यटन 2.6 बौद्ध पर्यटन की समकालीन प्रासंगिकता 2.7 भारतीय ज्ञान परम्परा और बौद्ध विरासत	1	2	16-20
		क्रेडिट--3 : स्रोत, परम्परा और परिप्रेक्ष्य 3.1 पालि और संस्कृत बौद्ध स्रोतों में तीर्थ-स्मृति 3.2 सम्राट् प्रियदर्शी अशोक, स्तूप और धम्म-प्रसार 3.3 यात्रावृत्तान्त और तीर्थ-परम्परा 3.4 बौद्ध सांस्कृतिक भूगोल 3.5 बौद्ध पर्यटन और राष्ट्र-निर्माण	1	3	16-20
		क्रेडिट--4 : अनुप्रयोग और परिचयात्मक अभ्यास 4.1 बौद्ध स्थलों का आधारभूत मानचित्रण	1	4	16-20

		4.2 तीर्थ-आधारित परिचय-लेखन 4.3 भारत में राज्यशः बौद्ध पर्यटन स्थल 4.4 लघु प्रस्तुति: एक प्रमुख बौद्ध स्थल 4.5 आध्यात्मिक पर्यटन वृत्त का अध्ययन (case study) 4.6 बौद्ध पर्यटन पर प्रारम्भिक असाइनमेंट (assignment)			
--	--	---	--	--	--

Rm

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

[Signature]

[Signature]

[Signature]
(Ram Nakshatra Prasad)

[Signature]

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्ध दर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Buddhist Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ-जीता/Lucknow Campus

प्रश्नपत्र-2

भारत के प्रमुख बौद्ध तीर्थ

(Major Buddhist Pilgrimage Sites of India)

सेमेस्टर	प्रश्नपत्र कोड	पाठ्यक्रम विवरण	क्रेडिट	यूनिट	घण्टे
सेमेस्टर - 1	DBTP-02	पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) : 1. भारत और निकटवर्ती क्षेत्र के प्रमुख बौद्ध तीर्थों का व्यवस्थित अध्ययन कराना। 2. तीर्थस्थलों के ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व को स्पष्ट करना। 3. Buddhist Circuit की अवधारणा तथा तीर्थ-मार्ग नियोजन की समझ विकसित करना। 4. स्थलों के आधार पर itinerary design और destination profiling का प्रशिक्षण देना। 5. विद्यार्थियों में field orientation और heritage sensitivity विकसित करना। अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : 1. विद्यार्थी प्रमुख बौद्ध तीर्थों की पहचान और वर्गीकरण कर सकेंगे। 2. वे प्रत्येक स्थल का ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व समझा सकेंगे। 3. वे तीर्थ-पर्यटन मार्गों की रूपरेखा तैयार कर सकेंगे। 4. वे visitor briefing हेतु स्थल-आधारित सामग्री तैयार कर सकेंगे। 5. वे Buddhist Circuit की कार्यात्मक उपयोगिता पर विचार प्रस्तुत कर सकेंगे।			

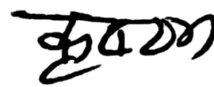
		प्रश्नपत्र का नाम (Name of the Paper) : भारत के प्रमुख बौद्ध तीर्थ (Major Buddhist Pilgrimage Sites of India)			
		क्रेडिट--1 : चार महातीर्थ और अठ्ठ महाठानानि (क) चार महातीर्थ 1.1 लुम्बिनी 1.2 बोधगया 1.3 सारनाथ 1.4 कुशीनगर (ख) अठ्ठ महाठानानि उक्त चार महातीर्थों सहित- 1.5 राजगीर सह नालन्दा 1.6 श्रावस्ती 1.7 वैशाली 1.8 संकिस्सा (संकाश्य) 1.9 चार महातीर्थों एवं आठ महास्थानों का आध्यात्मिक महत्व	1	1	16-20

	क्रेडिट--2 : मध्य गङ्गा एवं उत्तर भारत के तीर्थ 2.1 केसरिया 2.2 लखनऊ 2.3 रामग्राम 2.4 अहिच्छत्र 2.5 कौशाम्बी 2.5 लौरिया-नन्दनगढ़	1	2	16-20
	क्रेडिट--3 : शिक्षा, संस्कृति और स्मारक केन्द्र 3.1 नालन्दा 3.2 विक्रमशिला 3.3 साँची 3.4 अजंता 3.5 एलोरा 3.6 तवांग मठ 3.7 घूम मठ (दार्जिलिंग) 3.8 नामद्रोलिंग मठ (बायलकुप्पे)	1	3	16-20

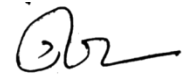
		3.9 रत्नागिरि, उदयगिरि, ललितगिरि - बौद्ध त्रिक (त्रिशिखर)			
		क्रेडिट--4 : दक्षिण और पश्चिम भारत के बौद्ध स्थल 4.1 अमरावती 4.2 नागार्जुनकोंडा 4.3 वडनगर 3.4 बांसवाड़ा 4.4 कन्हेरी 4.5 कार्ले/भाजा 4.6 क्षेत्रीय बौद्ध स्थलों का दस्तावेजीकरण (documentation) 4.7 बौद्ध सर्किट यात्रा-कार्यक्रम निर्माण (Buddhist Circuit itinerary preparation)	1	4	16-20


Prof. Ramesh Prasad
 Sampurnanand Sanskrit University
 Varanasi - 221002






 (Ram Nakshatra Prasad)


 अध्यक्ष/Head of the Department
 बौद्ध दर्शन-पालि विभाग
 Dept. of Buddha Darshan & Pali
 केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
 Central Sanskrit University
 लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

प्रश्नपत्र-3

बौद्ध इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व
(Buddhist History, Culture and Archaeology)

सेमेस्टर	प्रश्नपत्र कोड	पाठ्यक्रम विवरण	क्रेडिट	यूनिट	घण्टे
सेमेस्टर - 1	DBTP-03	पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) : 1. बौद्ध इतिहास की प्रमुख अवस्थाओं और सांस्कृतिक विकास को समझाना । 2. बौद्ध कला, स्थापत्य, मूर्तिकला और पुरातात्विक अवशेषों का परिचय देना । 3. सम्राट् अशोक, स्तूप, विहार और विश्वविद्यालय परम्परा की भूमिका स्पष्ट करना । 4. विद्यार्थियों को archaeological literacy और site reading के लिए प्रशिक्षित करना । 5. बौद्ध सांस्कृतिक विरासत और संरक्षण-जागरूकता विकसित करना । अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : 1. विद्यार्थी बौद्ध इतिहास की प्रमुख घटनाओं और चरणों को रेखांकित कर सकेंगे । 2. वे बौद्ध कला एवं स्थापत्य की आधारभूत विशेषताओं की पहचान कर सकेंगे । 3. वे प्रमुख पुरास्थलों की सांस्कृतिक व्याख्या कर सकेंगे । 4. वे धरोहर संरक्षण के महत्त्व को समझ सकेंगे । 5. वे पुरातात्विक सामग्री को पर्यटन-सन्दर्भ में पढ़ने की प्रारम्भिक क्षमता विकसित करेंगे ।			

		प्रश्नपत्र का नाम (Name of the Paper) : बौद्ध इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व (Buddhist History, Culture and Archaeology)			
		क्रेडिट--1 : बौद्ध इतिहास की रूपरेखा 1.1 बुद्धकालीन भारत 1.2 छः थेरवादी संगीतियाँ 1.3 अशोक और धम्म-प्रसार 1.4 भारत में बौद्ध धर्म का विकास और रूपान्तरण 1.5 महान् बौद्ध राजा और बौद्ध धर्म का वैभव 1.6 एशिया में बौद्ध प्रभाव	1	1	16-20
		क्रेडिट--2 : कला और स्थापत्य 2.1 स्तूप वास्तु 2.2 चैत्य और विहार 2.3 बौद्ध मूर्तिकला 2.4 चित्रकला परम्परा	1	2	16-20

		2.5 प्रतीक, चिह्न और प्रतिमा विज्ञान (iconography)			
		क्रेडिट--3 : पुरातत्त्व और धरोहर अध्ययन 3.1 उत्खनन और पुरास्थल-अध्ययन 3.2 अभिलेख, अवशेष और अवशेष-परम्परा (Relic Tradition) 3.3 भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI) और धरोहर-संरक्षण 3.4 यूनेस्को धरोहर परिप्रेक्ष्य (UNESCO Heritage Perspective) 3.5 संग्रहालय और स्थल-व्याख्या (Site Interpretation)	1	3	16-20
		क्रेडिट--4 : अनुप्रयुक्त अध्ययन 4.1 स्मारक का स्थल-प्रतिवेदन (Site Report)/बौद्ध कला का दृश्य-दस्तावेजीकरण (Visual Documentation)-- 4.1.1 बोधगया: महाबोधि महाविहार	1	4	16-20

		4.1.2 सारनाथ: धम्मके स्तूप 4.1.3 कुशीनगर: महापरिनिब्बान स्तूप 4.1.4 साँची: विश्व विरासत कलात्मक स्तूप 4.1.5 अजन्ता: गुफाएँ 4.1.6 एलोरा: गुफाएँ 4.1.7 कन्हेरी: गुफाएँ 4.2 धरोहर-सूची निर्माण (Heritage Inventory Preparation)			
--	--	--	--	--	--

Rm

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

[Signature]

[Signature]

[Signature]
(Ram Nakshatra Prasad)

[Signature]

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विकासशाखा
Dept. of Buddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

प्रश्नपत्र-4

पर्यटन प्रबन्धन एवं धरोहर की व्याख्या

(Heritage Interpretation) [Tourism Management and Heritage Interpretation]

सेमेस्टर	प्रश्नपत्र कोड	पाठ्यक्रम विवरण	क्रेडिट	यूनिट	घण्टे
सेमेस्टर - 1	DBTP-04	पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) : 1. पर्यटन-प्रबन्धन के मूल सिद्धान्तों और प्रक्रियाओं का परिचय देना। 2. धरोहर-व्याख्या, आगन्तुक-अनुभव (Visitor Experience) और गन्तव्य-प्रस्तुतीकरण (Destination Presentation) की समझ विकसित करना। 3. बौद्ध धरोहर-स्थलों के लिए प्रबन्धन, सुरक्षा और आगन्तुक-सेवाओं का अध्ययन कराना। 4. यात्रा-कार्यक्रम (Itinerary), भ्रमण-पैकेज-निर्माण (Package Design) और पर्यटन-समन्वयन (Tourism Coordination) का प्रशिक्षण देना। 5. विद्यार्थियों को सिद्धान्त और व्यवहारिक अभिमुखता (Theory and Practical Orientation) के समन्वय से सक्षम बनाना।			
		अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : 1. विद्यार्थी पर्यटन-प्रबन्धन की आधारभूत अवधारणाओं को समझ सकेंगे। 2. वे धरोहर-व्याख्या की तकनीकों का उपयोग कर सकेंगे।			

		3. वे भ्रमण-पैकेज और यात्रा-कार्यक्रम का प्रारूप तैयार कर सकेंगे। 4. वे आगन्तुक-प्रबन्धन और गन्तव्य-प्रस्तुतीकरण में प्रारम्भिक दक्षता प्राप्त करेंगे। 5. वे बौद्ध धरोहर-स्थलों के पर्यटन-प्रबन्धन की समस्याओं का विश्लेषण कर सकेंगे।			
		प्रश्नपत्र का नाम (Name of the Paper) : पर्यटन प्रबन्धन एवं धरोहर की व्याख्या (Heritage Interpretation) [Tourism Management and Heritage Interpretation]			
		क्रेडिट--1 : पर्यटन-प्रबन्धन का परिचय 1.1 पर्यटन की संकल्पना और प्रकार 1.2 पर्यटन उद्योग की संरचना 1.3 भ्रमण-संचालन (Tour Operation) की आधारभूत प्रक्रिया 1.4 आगन्तुक-प्रबन्धन (Visitor Management) 1.5 बौद्ध पर्यटन की विशिष्टताएँ	1	1	16-20

		क्रेडिट--2 : धरोहर-व्याख्या 2.1 व्याख्या (Interpretation) की संकल्पना 2.2 स्थल-कथन निर्माण (Site Narrative Development) 2.3 संकेतक-पट्ट (Signage), पुस्तिका (Brochure) और मार्गदर्शक-लिपि (Guide Script) 2.4 संग्रहालय एवं स्मारक-व्याख्या 2.5 अनुभवात्मक अधिगम और धरोहर-पथ (Heritage Walk)	1	2	16-20
		क्रेडिट--3 : भ्रमण-योजना और समन्वयन 3.1 यात्रा-योजना-निर्माण (Itinerary Planning) 3.2 लागत-निर्धारण और व्यवस्थापन (Costing and Logistics) 3.3 समूह-प्रबन्धन (Group Handling) 3.4 सुरक्षा, नीतिशास्त्र और प्रोटोकॉल	1	3	16-20

		3.5 तीर्थ-पैकेज-निर्माण (Pilgrimage Package Design)			
		क्रेडिट--4 : नागरिक कर्तव्य एवं अनुप्रयोग 4.1 बौद्ध धरोहर के प्रति नागरिक उत्तरदायित्व 4.2 धरोहर-संरक्षण और समुदाय-अभिमुखता 4.3 स्वच्छता, पर्यावरण और सतत बौद्ध पर्यटन 4.4 कानून, नीति और नागरिक सहभागिता 4.5 परियोजना-आधारित नागरिक अनुप्रयोग 4.6 धरोहर-पथ योजना (Heritage Walk Plan)	1	4	16-20

Rm

Prof. Ramesh Prasad

Sampurnanand Sanskrit University

Varanasi - 221002

[Signature]

[Signature]

[Signature]
(Ram Nakshatra Prasad)

[Signature]

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Buddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

सेमेस्टर 2 (16 क्रेडिट)

पाठ्यक्रम संरचना (Detailed Course Structure)

प्रश्नपत्र-5

अन्तरराष्ट्रीय बौद्ध पर्यटन

(International Buddhist Tourism)

सेमेस्टर	प्रश्नपत्र कोड	पाठ्यक्रम विवरण	क्रेडिट	यूनिट	घण्टे
सेमेस्टर - 2	DBTP-05	पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) : 1. अंतरराष्ट्रीय बौद्ध पर्यटन के स्वरूप, नेटवर्क और प्रवृत्तियों का अध्ययन कराना। 2. एशियाई बौद्ध देशों और भारत के बीच सांस्कृतिक पर्यटन सम्बन्ध स्पष्ट करना। 3. वैश्विक बौद्ध समुदाय, तीर्थयात्री-प्रवाह (Pilgrimage Flows) और सांस्कृतिक कूटनीति (Cultural Diplomacy) की समझ देना। 4. विद्यार्थियों को अंतरराष्ट्रीय गन्तव्य-प्रोफाइल निर्माण (International Destination Profiling) और तुलनात्मक पर्यटन-अध्ययन (Comparative Tourism Studies) से परिचित कराना। 5. भारत की बौद्ध विरासत के वैश्विक प्रस्तुतीकरण की क्षमता विकसित करना।			
		अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : 1. विद्यार्थी अंतरराष्ट्रीय बौद्ध पर्यटन के प्रमुख आयामों का वर्णन कर सकेंगे।			

		2. वे विभिन्न देशों के बौद्ध पर्यटन मॉडल का तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे। 3. वे भारत की वैश्विक बौद्ध पर्यटन-सम्भावना को स्पष्ट कर सकेंगे। 4. वे अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के लिए उपयुक्त सामग्री तैयार कर सकेंगे। 5. वे अंतरसांस्कृतिक पर्यटन-संप्रेषण (Cross-Cultural Tourism Communication) के मूल तत्व समझ सकेंगे।			
		प्रश्नपत्र का नाम (Name of the Paper) : अन्तरराष्ट्रीय बौद्ध पर्यटन (International Buddhist Tourism)			
		क्रेडिट--1 : वैश्विक बौद्ध परिदृश्य 1.1 श्रीलंका 1.2 म्यांमार 1.3 थाईलैण्ड 1.4 नेपाल 1.5 जापान 1.6 कोरिया 1.7 वियतनाम 1.8 इण्डोनेशिया 1.9 लाओस 1.10 भूटान	1	1	16-20

		क्रेडिट--2 : भारत और वैश्विक सम्पर्क 2.1 भारत की बौद्ध धरोहर-कूटनीति (Heritage Diplomacy) 2.2 अंतरराष्ट्रीय तीर्थ-परिपथ 2.3 वैश्विक बौद्ध सम्मेलन और सांस्कृतिक संवाद 2.4 विदेशी पर्यटकों की अपेक्षाएँ 2.5 गन्तव्य-ब्राण्डिंग (Destination Branding)	1	2	16-20
		क्रेडिट--3 : नीतियाँ और संस्थागत परिप्रेक्ष्य 3.1 पर्यटन मंत्रालय की पहलें (Ministry of Tourism Initiatives) 3.2 इनक्रेडिबल इंडिया और बौद्ध प्रचार 3.3 प्रसाद योजना (PRASAD Scheme) का परिचय 3.4 यूनेस्को और विश्व धरोहर विमर्श 3.5 अंतरराष्ट्रीय सहयोग की सम्भावनाएँ	1	3	16-20

	क्रेडिट--4 : शासकीय पर्यटन नीति, अन्तर्राष्ट्रीय यात्री सुविधाएँ और भविष्यगामी सम्भावनाएँ 4.1 राष्ट्रीय पर्यटन नीति का अवलोकन 4.2 भारत में अन्तर्राष्ट्रीय यात्री-सुविधाएँ और सेवा-मानक 4.3 तीर्थ-स्थलों पर बुनियादी सुविधाएँ: आवास, भोजन, पेयजल, स्वच्छता 4.4 सूचना-केन्द्र, साइनज (Signage), गाइड-सेवा और बहुभाषिक सूचना-सामग्री 4.5 तीर्थयात्रियों के लिए सुरक्षा, स्वास्थ्य और आपातकालीन सेवाएँ 4.6 पर्यटन प्रबन्धन और समन्वय तंत्र 4.7 सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) और धार्मिक-सांस्कृतिक संस्थाओं की भूमिका 4.8 भविष्यगामी सम्भावनाएँ और नवाचार 4.9 बौद्ध सर्किट का विस्तार और नए मार्ग/गन्तव्यों की सम्भावनाएँ 4.10 डिजिटल नवाचार: स्मार्ट तीर्थ, ई-बुकिंग, वर्चुअल टूर, मोबाइल ऐप्स 4.11 समुदाय-आधारित पर्यटन, स्थानीय उद्यमिता और आजीविका-सम्भावनाएँ	1	4	16-20
--	--	---	---	-------

		4.12 सतत (Sustainable) और उत्तरदायी (Responsible) बौद्ध पर्यटन के मॉडल 4.13 दीर्घकालिक दृष्टि: शोध, शिक्षा, युवाओं की भागीदारी और अंतरराष्ट्रीय ब्राण्ड निर्माण 4.14 भारत और अन्य बौद्ध गन्तव्यों का तुलनात्मक अध्ययन			
--	--	--	--	--	--

Rm

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

[Signature]

[Signature]

[Signature]
(Ram Nakshatra Prasad)

[Signature]

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-सिन्धुशास्त्र
Dept. of Buddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

प्रश्नपत्र-6

पर्यटन-मार्गदर्शन, आतिथ्य एवं संप्रेषण-कौशल
(Tour Guiding, Hospitality and Communication Skills)

सेमेस्टर	प्रश्नपत्र कोड	पाठ्यक्रम विवरण	क्रेडिट	यूनिट	घण्टे
सेमेस्टर - 2	DBTP-06	पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) : - विद्यार्थियों को पर्यटन-मार्गदर्शन (Tour Guiding) के सिद्धान्तों और व्यवहारिक पक्षों में प्रशिक्षित करना। - आतिथ्य (Hospitality), शिष्टाचार (Etiquette), आगन्तुक-सेवा (Visitor Care) और सेवा-अभिमुखता (Service Orientation) की समझ विकसित करना। - बहुभाषिक संप्रेषण, प्रस्तुतीकरण और व्याख्या-आधारित संचार को सुदृढ़ करना। - समूह-प्रबन्धन, संघर्ष-प्रबन्धन और मार्गदर्शक-नीतिशास्त्र सिखाना। - रोजगारपरक सौम्य-कौशल (Soft Skills) और व्यावसायिक दक्षता विकसित करना। अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : - विद्यार्थी धरोहर-मार्गदर्शक (Heritage Guide) के रूप में प्रारम्भिक स्तर पर कार्य कर सकेंगे। - वे आगन्तुकों से प्रभावी संवाद स्थापित कर सकेंगे। - वे आतिथ्य और आगन्तुक-सेवा के मानकों का पालन कर सकेंगे। - वे मार्गदर्शक-लिपि (Guiding Script) और प्रत्यक्ष व्याख्या (Live Explanation) तैयार कर सकेंगे। - वे समूह-प्रबन्धन और व्यवहारिक परिस्थितियों का सामना कर सकेंगे।			

		प्रश्नपत्र का नाम (Name of the Paper) : पर्यटन-मार्गदर्शन, आतिथ्य एवं संप्रेषण-कौशल (Tour Guiding, Hospitality and Communication Skills)			
		क्रेडिट--1 : पर्यटन-मार्गदर्शन की आधारभूमि 1.1 मार्गदर्शक की भूमिका और उत्तरदायित्व 1.2 मार्गदर्शक-नीतिशास्त्र (Guiding Ethics) 1.3 स्थल-परिचय तकनीकें (Site Briefing Techniques) 1.4 समय और समूह-प्रबन्धन 1.5 सुरक्षा और प्रोटोकॉल	1	1	16-20
		क्रेडिट--2 : आतिथ्य और आगन्तुक-सेवा 2.1 आतिथ्य उद्योग का परिचय 2.2 अतिथि-व्यवहार (Guest Handling) 2.3 शिष्टाचार और व्यक्तित्व-संवर्द्धन (Etiquette and Grooming)	1	2	16-20

		2.4 शिकायत-निवारण (Complaint Handling)			
		2.5 तीर्थ-पर्यटन में सेवा-गुणवत्ता			
		क्रेडिट--3 : संप्रेषण-कौशल	1	3	16-20
		3.1 मौखिक संप्रेषण (Verbal Communication)			
		3.2 अमौखिक संप्रेषण (Non-Verbal Communication)			
		3.3 अंतरसांस्कृतिक संप्रेषण			
		3.4 सार्वजनिक वक्तृत्व और कथन-कौशल (Public Speaking and Narration)			
		3.5 बहुभाषिक पर्यटक-सहायता			
		क्रेडिट--4 : व्यावहारिक अभिमुखता और बहुमुखी कौशल	1	4	16-20
		4.1 प्रामाणिक तथ्य प्रस्तुतीकरण			
		4.2 पालि भाषा एवं धम्मलिपि ब्राह्मी का प्रशिक्षण			
		4.3 बुद्धधम्म एवं बौद्धपरम्पराओं का प्रामाणिक ज्ञान			

		4.4 विविध भाषाओं एवं लिपियों का ज्ञान 4.5 पुरातत्त्व, शिलालेख एवं पाण्डुलिपि विज्ञान का ज्ञान 4.6 आकर्षक ढंग से मार्गदर्शन एवं प्रत्यक्ष व्याख्या 4.7 अभिनय, विनम्रता और संवाद कौशल 4.8 प्रत्यालोचन और आत्म-मूल्यांकन			
--	--	---	--	--	--

Rm

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

[Signature]

[Signature]

[Signature]
(Ravi Nakshatra Prasad)

[Signature]

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि-विभाग
Dept. of Buddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

प्रश्नपत्र-7

डिजिटल पर्यटन, उद्यमिता एवं सतत बौद्ध पर्यटन

(Digital Tourism, Entrepreneurship and Sustainable Buddhist Tourism)

सेमेस्टर	प्रश्नपत्र कोड	पाठ्यक्रम विवरण	क्रेडिट	यूनिट	घण्टे
सेमेस्टर - 2	DBTP-07	पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) : 1. विद्यार्थियों को डिजिटल पर्यटन उपकरणों (Digital Tourism Tools) और ऑनलाइन गन्तव्य-प्रचार (Online Destination Promotion) से परिचित कराना। 2. बौद्ध पर्यटन उद्यमिता (Buddhist Tourism Entrepreneurship) और स्व-रोजगार के अवसरों की समझ देना। 3. सतत, उत्तरदायी और समुदाय-संलग्न पर्यटन-पद्धतियाँ विकसित करना। 4. गन्तव्य-विपणन (Destination Marketing), डिजिटल मानचित्रण और पर्यटन-सामग्री-निर्माण (Tourism Content Creation) का अभ्यास कराना। 5. समकालीन पर्यटन-क्षेत्र में नवाचार और उद्यमशीलता की दृष्टि विकसित करना। अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : 1. विद्यार्थी डिजिटल माध्यमों से बौद्ध पर्यटन का प्रचार कर सकेंगे। 2. वे पर्यटन उद्यमिता का मूल मॉडल (Basic Tourism Entrepreneurship Model) तैयार कर सकेंगे। 3. वे सतत पर्यटन के सिद्धान्तों को पर्यटन-योजना में शामिल कर सकेंगे।			

		4. वे डिजिटल मानचित्र, सामग्री-टिप्पणी और ऑनलाइन प्रचार-प्रारूप (Online Campaign Draft) बना सकेंगे। 5. वे सामुदायिक सहभागिता और उत्तरदायी पर्यटन की उपयोगिता समझ सकेंगे।			
		प्रश्नपत्र का नाम (Name of the Paper) : डिजिटल पर्यटन, उद्यमिता एवं सतत बौद्ध पर्यटन (Digital Tourism, Entrepreneurship and Sustainable Buddhist Tourism)			
		क्रेडिट--1 : डिजिटल पर्यटन उपकरण 1.1 डिजिटल पर्यटन का परिचय 1.2 जी.आई.एस. तथा मानचित्र-आधारित अभिमुखता (GIS and Map-Based Orientation) 1.3 सोशल मीडिया प्रचार 1.4 ई-पुस्तिका और सामग्री-लेखन (E-Brochure and Content Writing) 1.5 धरोहर-पर्यटन हेतु आभासी सहायता (Virtual Support for Heritage Tourism)	1	1	16-20

		क्रेडिट--2 : गन्तव्य-विपणन और ब्राण्डिंग 2.1 गन्तव्य-छवि (Destination Image) 2.2 बौद्ध परिपथ ब्राण्डिंग 2.3 पर्यटन हेतु कथन-कौशल (Storytelling for Tourism) 2.4 सामग्री-तिथि-पत्रक और प्रचार-अभियान (Content Calendar and Campaign) 2.5 यात्री सुविधाएँ	1	2	16-20
		क्रेडिट--3 : उद्यमिता और आजीविका 3.1 पर्यटन उद्यमिता 3.2 बौद्ध पर्यटन में नव-उद्यम के विचार 3.3 सूक्ष्म-उद्यम योजना (Micro-Enterprise Planning) 3.4 भ्रमण-परामर्श और स्वतंत्र सेवा (Tour Consultancy and Freelancing) 3.5 वित्तीय आधारभूत जानकारीयाँ और व्यवहार्यता (Financial Basics and Feasibility)	1	3	16-20

		3.6 टूर आयोजन 3.7 ध्यान एवं माइंडफुलनेस रिट्रीट 3.8 आध्यात्मिक पर्यटन 3.9 स्थानीय भोजन, वस्त्र एवं वस्तुओं का व्यवसाय-व्यापार			
		क्रेडिट--4 : सतत बौद्ध पर्यटन 4.1 सतत पर्यटन के सिद्धान्त 4.2 उत्तरदायी तीर्थ-प्रबन्धन (Responsible Pilgrimage Management) 4.3 सामुदायिक सहभागिता 4.4 अपशिष्ट, पारिस्थितिकी और धरोहर-संरक्षण 4.5 सतत पर्यटन कार्य-योजना (Sustainable Tourism Action Plan)	1	4	16-20

Rm

Prof. Ramesh Prasad
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi - 221002

[Signature]

[Signature]

[Signature]
(Ram Nakshatra Prasad)

[Signature]

अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धार्थ-पालि-विभाग
Dept. of Buddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

प्रश्नपत्र-8
बौद्ध पर्यटन की भविष्यगामी सम्भावनाएँ एवं क्षेत्र-अध्ययन
(Future Prospects of Buddhist Tourism and Field Study)

सेमेस्टर	प्रश्नपत्र कोड	पाठ्यक्रम विवरण	क्रेडिट	यूनिट	घण्टे
सेमेस्टर - 2	DBTP-08	पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives) : - विद्यार्थियों को नये बौद्ध पर्यटन स्थलों, उभरते गन्तव्यों और संभावित परिपथों (Prospective Circuits) की समझ देना। - बौद्ध पर्यटन के संवर्धन में शासकीय योजनाओं, अवसंरचना विकास और नीतिगत सहयोग की आवश्यकता को रेखांकित करना। - बौद्ध पर्यटन की भविष्यगामी सम्भावनाओं, नवाचारों और उद्यमिता-आधारित अवसरों पर विचार विकसित करना। - क्षेत्रीय अभिमुखता (Field Orientation) के माध्यम से वास्तविक पर्यटन-परिस्थितियों का अवलोकन, दस्तावेजीकरण और विश्लेषण कराना। - रोजगारपरक परियोजना-कार्य (Employability-Oriented Project Work) के द्वारा विद्यार्थियों को व्यावहारिक पोर्टफोलियो तैयार करने में सक्षम बनाना। अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) : - नये बौद्ध पर्यटन स्थलों, उभरते गन्तव्यों और सम्भावित तीर्थ-मार्गों की पहचान और प्रारम्भिक मानचित्रण कर सकेंगे। - वे शासकीय संवर्धन-कार्यों (Government Promotion and Development Measures) की आवश्यकता और प्रमुख योजनाओं का विवेचन कर सकेंगे। - वे बौद्ध पर्यटन की दीर्घकालिक सम्भावनाओं, डिजिटल नवाचार और उद्यमिता-आधारित मॉडल पर विचार प्रस्तुत कर सकेंगे।			

		- वे क्षेत्र-अध्ययन, भ्रमण-प्रतिवेदन, इंटरनशिप अनुभव और रोजगारपरक परियोजना को समेकित रूप में तैयार कर सकेंगे। - वे बौद्ध पर्यटन को समाजोपयोगी, पर्यावरण-संवेदी और रोजगार-समर्थ मॉडल के रूप में कल्पित करने की दृष्टि विकसित कर सकेंगे।		
		प्रश्नपत्र का नाम (Name of the Paper) : बौद्ध पर्यटन की भविष्यगामी सम्भावनाएँ एवं क्षेत्र-अध्ययन (Future Prospects of Buddhist Tourism and Field Study)		
		क्रेडिट-1 : नये बौद्ध पर्यटन स्थल 1.1 नये बौद्ध तीर्थ-स्थलों की पहचान: क्षेत्र-विशेष उदाहरण (उदा. कम चर्चित स्तूप, गुफा-विहार, मठ, नये बुद्ध विहार) 1.2 “राज्यवार बौद्ध विरासत” के आधार पर उभरते गन्तव्य और परिपथ-विस्तार की सम्भावनाएँ 1.3 ग्रामीण-पर्यटन, समुदाय-आधारित तीर्थ-स्थल और धरोहर-पथ का विकास 1.4 आधुनिक मठ, ध्यान-केंद्र और आध्यात्मिक रिट्रीट को बौद्ध पर्यटन से जोड़ने की सम्भावनाएँ	1	16-20

		1.5 नये स्थलों के लिए आधारभूत गन्तव्य-प्रोफाइल (Destination Profile) तैयार करने का अभ्यास			
		क्रेडिट-2 : शासकीय संवर्धन कार्यों की आवश्यकता 2.1 शासकीय पर्यटन नीति और बौद्ध पर्यटन-संवर्धन की प्राथमिकताएँ 2.2 स्वदेश दर्शन योजना, प्रसाद योजना और बौद्ध सर्किट-परियोजनाओं का परिचय 2.3 अवसंरचना विकास: संपर्क (Connectivity), यात्री-सुविधाएँ, सूचना-केन्द्र, सुरक्षा-व्यवस्था 2.4 केन्द्र-राज्य-स्थानीय निकाय, ASI और अन्य संस्थाओं के संयुक्त प्रयास की आवश्यकता 2.5 नागरिक सहभागिता, जन-जागरूकता अभियान और नीति-स्तर पर सुझाव-तैयारी (Policy Suggestions)	1	2	16-20
		क्रेडिट-3 : भविष्यगामी सम्भावनाएँ	1	3	16-20

		3.1 बौद्ध पर्यटन और अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक कूटनीति (Buddhist Tourism and Cultural Diplomacy) 3.2 डिजिटल नवाचार: स्मार्ट तीर्थ, ई-बुकिंग, वर्चुअल टूर, मोबाइल ऐप और बहुभाषिक पोर्टल 3.3 उद्यमिता-आधारित सम्भावनाएँ: सूक्ष्म-उद्यम, गाइड-सेवा, कंटेन्ट-विकास, heritage walk design 3.4 सतत और उत्तरदायी बौद्ध पर्यटन के भविष्य-मॉडल: पर्यावरण, समुदाय, धरोहर-संरक्षण 3.5 शोध, शिक्षा और युवा-भागीदारी: भविष्यगामी बौद्ध पर्यटन-अध्ययन की दिशाएँ			
		क्रेडिट-4 : क्षेत्रीय अभिमुखता, क्षेत्र-अध्ययन एवं रोजगारपरक परियोजना 4.1 क्षेत्रीय अभिमुखता: क्षेत्र-भ्रमण पद्धति, स्थल-अवलोकन, नैतिक क्षेत्र-आचरण	1	4	16-20

		4.2 क्षेत्र-अध्ययन प्रतिवेदन (Field Study Report): डेटा-संग्रह, दस्तावेजीकरण, फोटोग्राफिक/मैप-आधारित संलग्नक 4.3 रोजगारपरक परियोजना-कार्य: विषय-चयन, प्रस्ताव-तैयारी, रिपोर्ट-लेखन, प्रस्तुतीकरण और पोर्टफोलियो तैयार करना 4.4 समेकन: क्षेत्र-प्रतिवेदन, परियोजना, प्रस्तुति और मौखिक परीक्षा (Viva) के माध्यम से अधिगम का समाहार			
--	--	--	--	--	--

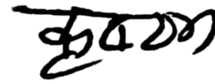
Zom

Prof. Ramesh Prasad

Sampurnanand Sanskrit University

Varanasi - 221002







(Ram Nakshatra Prasad)



अध्यक्ष/Head of the Department
बौद्धदर्शन-पालि विभाग
Dept. of Buddha Darshan & Pali
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Central Sanskrit University
लखनऊ परिसर/Lucknow Campus

मूल्यांकन योजना

सम्पूर्ण कार्यक्रम का मूल्यांकन सतत आन्तरिक मूल्यांकन, सैद्धान्तिक परीक्षा, व्यवहारिक अभ्यास, क्षेत्र-अध्ययन, प्रस्तुति और परियोजना-आधारित अधिगम के समन्वित ढाँचे पर आधारित होगा। प्रत्येक प्रश्नपत्र में सिद्धान्त और व्यवहारिक अभिमुखता के संतुलन को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित मूल्यांकन-पद्धति अपनायी जाएगी।

- लिखित परीक्षा (Written Examination) – 60%
- कार्य-नियोजन/असाइनमेंट (Assignment) – 20%
- प्रस्तुति/संगोष्ठी (Presentation/Seminar) – 20%

अधिगम परिणाम

इस डिप्लोमा प्रोग्राम के पूर्ण होने पर विद्यार्थी निम्नलिखित अधिगम परिणाम प्राप्त करेंगे:-

- विद्यार्थी बौद्ध धर्म, बौद्ध सांस्कृतिक विरासत और प्रमुख बौद्ध तीर्थों का तथ्यपरक एवं सुव्यवस्थित परिचय दे सकेंगे।
- वे भारत तथा विश्व के प्रमुख बौद्ध पर्यटन स्थलों की पहचान, वर्गीकरण और उनकी सांस्कृतिक व्याख्या कर सकेंगे।
- वे तीर्थ-मार्ग, यात्रा-कार्यक्रम (Tour Itinerary) और विषयक बौद्ध परिपथ (Thematic Buddhist Circuits) की रूपरेखा तैयार कर सकेंगे।
- वे धरोहर-मार्गदर्शक (Heritage Guide) अथवा स्थल-व्याख्याकार (Site Interpreter) के रूप में मूलभूत स्तर पर कार्य कर सकेंगे।
- वे पर्यटन-प्रबन्धन (Tourism Management), आगन्तुक-सेवा (Visitor Care), आतिथ्य (Hospitality) और समूह-समन्वयन (Group Coordination) की आधारभूत प्रक्रियाओं को व्यवहार में ला सकेंगे।
- वे डिजिटल मंचों के माध्यम से बौद्ध पर्यटन का प्रचार-प्रसार कर सकेंगे और आवश्यक डिजिटल सामग्री तैयार कर सकेंगे।
- वे सतत (Sustainable), उत्तरदायी (Responsible) और समुदाय-उन्मुख (Community-Oriented) पर्यटन-पद्धतियों की रूपरेखा बना सकेंगे।
- वे क्षेत्र-अध्ययन (Field Study), धरोहर-पथ (Heritage Walk), प्रकरण-अध्ययन (Case Study) और परियोजना-प्रतिवेदन (Project Report) तैयार कर तथा प्रस्तुत कर सकेंगे।
- वे बौद्ध सांस्कृतिक सम्पर्क, अंतरराष्ट्रीय पर्यटन-संवाद और विरासत-जागरूकता को बढ़ावा देने वाली गतिविधियों में सक्रिय योगदान कर सकेंगे।
- वे बौद्ध पर्यटन से सम्बन्धित उद्यमिता (Entrepreneurship), स्वतंत्र सेवाएँ (Freelancing) या अन्य रोजगारपरक कार्यक्षेत्र चुनने और प्रारम्भिक स्तर पर आगे बढ़ने में सक्षम होंगे।
- वे शासकीय पर्यटन नीति, विकास एवं रोजगार के अवसरों को समझ सकेंगे।
- पुरातात्विक संरक्षण उपाय, रोजगार के प्रति नवीन दृष्टि और भविष्यगामी सम्भावनाओं को समझ सकेंगे।